जुमा का खुत्बा

दिनांक: 1 रबीउल अव्वल 1448 हिजरी, बमुकाबिक 14 अगस्त 2026 ईस्वी

حَرارَةُ الصَّيْفِ: وَقَفاتٌ وَعِظاتٌ

गर्मी की सख़्ती: संदेश और नसीहतें

الحَمْدُ للهِ الهادِي لِمَنِ اسْتَهْداهُ، المُجِيبِ لِمَنْ دَعاهُ، النَّاصِرِ لِمَنِ اسْتَجارَ بِهِ وَناداهُ، لا هادِيَ لِمَنْ أَضَلَّ، وَلا مُضِلَّ لِمَنْ هَداهُ؛{وَمَا بِكُم مِنْ نِعْمَةٍ فَمِنَ اللهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْأَرُونَ } [النحل: 53]، وَأَشْهَدُ أَن لَّا إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لا شَرِيكَ لَهُ، المُتَقَدِّسُ فِي عُلاهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ وَمُصْطَفاهُ، وَخَلِيلُهُ وَمُجْتَباهُ، صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَمَنْ والاهُ، وَسَلَّمَ تَسْلِيمًا كَثِيرًا إِلَى يَوْمِ نَلْقاهُ.اما بعد!

हे अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से डरो:

{وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَا قَدَّمَتْ لِغَدٍ وَاتَّقُوا اللهَ إِنَّ اللهَ خَبِيرٌ بِمَا تَعْمَلُونَ} [الحشر: 18]

"और हर व्यक्ति को देखना चाहिए कि उसने कल (यानी आख़िरत) के लिए आगे क्या भेजा है, और अल्लाह से डरो, बेशक अल्लाह उन तमाम कामों से बाख़बर है जो तुम करते हो।" (सूरह अल-हश्र: 18)

हे ईमान वालो! अल्लाह तआला की हिकमत की मांग है कि उसने इस दुनिया को इम्तिहान, मेहनत और कठिन परिश्रम का घर बनाया है, जहाँ दुख, दर्द और थकान इंसान का मुक़द्दर हैं; ताकि मोमिनों की आज्ञाकारिता और शुक्रगुज़ारी सब पर ज़ाहिर हो जाए, और नाशुकरों तथा बेसब्रों का रवैया भी खुलकर सामने आ जाए। अल्लाह तआला का इरशाद है:

{لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي كَبَدٍ} [البلد: 4]

"बेशक हमने इंसान को मशक्कत और मुसीबतों में पैदा किया है।" (सूरह अल-बलद: 4) इस आज़माइश और इम्तिहान की एक झलक मौसमों का बदलना भी है। कभी सख़्त गर्मी आती है जो पाँवों को झुलसा देती है, और कभी ऐसी कड़ाके की सर्दी पड़ती है कि हड्डियाँ

तक दुखने लगती हैं। कभी-कभी साफ़ मौसम के बाद धूल-गर्द (आँधी) का सामना करना पड़ता है। ये तमाम बदलाव किसी मक़सद के बिना नहीं हैं, बल्कि उस महान हिकमत का हिस्सा हैं जो हमसे यह मांग करती है कि हम इनकी गहराई में उतरें और इनके अंदर छुपे हुए इलाही सत्यों पर विचार करें। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

{يُقَلِّبُ اللهُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِأُولِي الْأَبْصَارِ} [النور: 44]

"अल्लाह ही रात और दिन को उलटता-पलटता रहता है, बेशक इसमें आँखों वालों के लिए शिक्षा है।" (सूरह अन-नूर: 44)

हे अल्लाह के बन्दो! यह तेज़ गर्मी जो आज हम महसूस कर रहे हैं, असल में ग़ाफ़िल दिलों के लिए जागने का एक पैग़ाम और आख़िरत की याददिहानी है। यह इस बात की चेतावनी है कि दुनिया आराम करने की जगह नहीं, बल्कि मेहनत और अमल का घर है, ताकि इंसान आख़िरत के सफ़र के लिए नेकियों की पूँजी इकट्ठा कर ले और अपने रब की मुलाक़ात की तैयारी करे:

{فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ أَلْفَ سَنَةٍ} [المعارج: 4]

"उस दिन में जिसकी मिकदार पचास हज़ार साल होगी।" (सूरह अल-मआरीज: 4)

सूरज की यह झुलसा देने वाली लू और दोपहर का यह पसीना, असल में उस दिन की एक छोटी सी झलक है जब अल्लाह तआला तमाम लोगों को एक मैदान में जमा करेगा। उस वक्त सब पर सख़्त बोझ होंगे, होश उड़े हुए होंगे, सूरज सरों के बिल्कुल क़रीब आ चुका होगा, दिल डर से काँप रहे होंगे, स्तिथि बेहद गंभीर और मुसीबतें बहुत ज़्यादा होंगी।

अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया:

تُدْنَى الشَّمْسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنَ الْخَلْقِ، حَتَّى تَكُونَ مِنْهُمْ كَمِقْدَارِ مِيلٍ، فَيَكُونُ النَّاسُ عَلَى قَدْرِ أَعْمَالِهِمْ فِي الْعَرَقِ، فَمِنْهُمْ مَنْ يَكُونُ إِلَى كَعْبَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُونُ إِلَى رُكْبَتَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَكُونُ إِلَى حَقْوَيْهِ، وَمِنْهُمْ مَنْ يُلْجِمُهُ الْعَرَقُ إِلْجَامًا» قَالَ: وَأَشَارَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَدِهِ إِلَى فِيهِ

"क़यामत के दिन सूरज मख़लूक़ के इतना क़रीब कर दिया जाएगा कि वह केवल एक मील के फासले पर रह जाएगा, लोग अपने अमलों के हिसाब से पसीने में डूबे होंगे, चुनांचे किसी

का पसीना उसके टखनों तक होगा, किसी का घुटनों तक, किसी का कमर तक, और किसी को पसीना लगाम की तरह मुँह तक डुबो रहा होगा।" रावी कहते हैं: और रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने हाथ से अपने मुँह की तरफ इशारा किया। (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने हज़रत मिक़्दाद बिन अस्वद रज़िअल्लाह तआला अन्हु की रिवायत से नक़ल किया है)

मुसलमान भाइयो! इस भयानक और बेहद मुश्किल दिन अल्लाह तआला अपने ख़ास बन्दों पर अपनी महान दया विशाल कृपा की बारिश फरमाएगा; चुनांचे वह उन्हें अर्श के साए में पनाह देकर सूरज की गर्मी से निजात देगा, जिस दिन उसके साए के सिवा कोई साया न होगा, हम अल्लाह से उसकी महान दया का सवाल करते हैं।

उस दिन लोग उनके इस बुलंद मक़ाम और बेहतरीन हालत को देखकर रश्क़ करेंगे और इच्छा करेंगे कि काश उन्हें भी इस ठंडी छाँव का कोई हिस्सा मिल जाता! लेकिन यह नेमत पैसों या दुनियावी माल-दौलत से नहीं खरीदी जा सकती, बल्कि यह सिर्फ रात के समय और दिन के किनारों में नेक अमल करने और ज़मीन व आसमान के रब की नाराज़गी से बचने वाले कामों के ज़रीये ही हासिल होती है। यही कामयाबी की कुंजी और इस भयानक अज़ाब से निजात का एकमात्र रास्ता है।

चुनांचे इस दिन की गर्मी से बचने के माध्यमों में से वह मुबारक अमल भी है जो हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाह तआला अन्हु से साबित है कि नबी करीम ﷺ ने फरमाया:

سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللهُ فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلُّهُ: الْإِمَامُ الْعَادِلُ، وَشَابٌّ نَشَأَ بِعِبَادَةِ اللهِ، وَرَجُلٌ قَلْبُهُ مُعَلَّقٌ فِي الْمَسَاجِدِ، وَرَجُلَانِ تَحَابَّا فِي اللهِ، اجْتَمَعَا عَلَيْهِ وَتَفَرَّقَا عَلَيْهِ، وَرَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ، فَقَالَ: إِنِّي أَخَافُ اللهَ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَأَخْفَاهَا، حَتَّى لَا تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا تُنْفِقُ يَمِينُهُ، وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللهَ خَالِيًا، فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ

"सात क़िस्म के लोग हैं जिन्हें अल्लाह तआला अपने (अर्श के) साए में जगह देगा, जिस दिन उसके साए के सिवा कोई साया न होगा:

(1) आदिल हुक्मरां (न्यायप्रिय शासक),

(2) वह नौजवान जिसकी जवानी अल्लाह की इबादत में परवान चढ़ी हो,

(3) वह आदमी जिसका दिल मस्जिदों से लटका रहता हो,
(4) वे दो लोग जिन्होंने अल्लाह के लिए आपस में मोहब्बत की, उसी पर इकट्ठे हुए और उसी पर जुदा हुए,
(5) वह आदमी जिसे किसी पद और सुन्दरता वाली खूबसूरत औरत ने (बुरे काम की) दावत दी, तो उसने कहा: मैं अल्लाह से डरता हूँ,
(6) वह आदमी जिसने सदक़ा किया और उसे इस क़दर छुपाया कि उसके बाएँ हाथ को भी ख़बर न हुई कि उसके दाएँ हाथ ने क्या ख़र्च किया है, और
(7) वह आदमी जिसने अकेले में अल्लाह को याद किया तो उसकी आँखें छलक आईं।" (इस हदीस को इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)

रहमान के साए को पाने के माध्यमों में से आर्थिक तंगी के शिकार व्यक्ति को मोहलत देना और कर्ज़ की अदायगी के वक्त उसमें कमी करना भी है, यह ज़बरदस्त और इंसाफ करने वाले मालिक की तरफ से गुनाहों की माफी का सबब भी बनता है। चुनांचे हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाह तआला अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने फ़रमाया: मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को यह फरमाते हुए सुना:

مَنْ أَنْظَرَ مُعْسِرًا أَوْ وَضَعَ عَنْهُ؛ أَظَلَّهُ اللهُ فِي ظِلِّهِ

"जिसने किसी तंगदस्त को मोहलत दी या (उस का कर्ज़) माफ कर दिया, अल्लाह उसे अपने साए में जगह देगा।" (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)

ऐ अल्लाह के बन्दो! इन माध्यमों में से एक माध्यम अल्लाह के लिए आपस में मोहब्बत करना और उसकी रज़ा के लिए एक-दूसरे के साथ जुड़ना भी है। इस पवित्र रिश्ते में दुनिया का कोई मक़सद या व्यक्तिगत स्वार्थ शामिल नहीं होता। यह वह खुशनसीब लोग होते हैं जिन्होंने दीन को आपस में दोस्ती और दुश्मनी का पैमाना बनाया होता है और ईमान को भाईचारे का मज़बूत बंधन करार दिया होता है। इसी वजह से वे एक सच्ची, शुद्ध और हमेशा रहने वाली प्रेम भावना से परिपूर्ण होते हैं, और ऊँची जन्नत की छांव से भरपूर फायदा हासिल करते हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाह तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया:

إِنَّ اللهَ يَقُولُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: أَيْنَ الْمُتَحَابُّونَ بِجَلَالِي؟ الْيَوْمَ أُظِلُّهُمْ فِي ظِلِّي، يَوْمَ لَا ظِلَّ إِلَّا ظِلِّي

"बेशक अल्लाह तआला क़यामत के दिन फरमाएगा: कहाँ हैं वे लोग जो मेरी महिमा और जलाल के लिए आपस में मोहब्बत करते थे? आज मैं उन्हें अपने साए में जगह दूँगा, ऐसे दिन जबकि मेरे साए के सिवा कोई साया नहीं।" (इस हदीस को इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)

इस सख्त तरीन दिन में गर्मी और सख़्त सर्दी से बचाने वाली चीज़ों में से हर तरह का सदक़ा करना भी है, सदक़ा करने वाले को उसके अच्छे अमल के बदले के तौर पर अल्लाह तआला अपने साए से नवाज़ कर सम्मानित करेगा। नबी करीम ﷺ ने फरमाया:

إِنَّ الصَّدَقَةَ لَتُطْفِئُ عَنْ أَهْلِهَا حَرَّ الْقُبُورِ، وَإِنَّمَا يَسْتَظِلُّ الْمُؤْمِنُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِي ظِلِّ صَدَقَتِهِ

"बेशक सदक़ा सदक़ा करने वाले से कब्र की गर्मी को बुझा देता है, और बेशक मोमिन क़यामत के दिन अपने सदक़े के साए में होगा।" (इस हदीस को इमाम तबरानी ने हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु की रिवायत से नक़ल किया है और अल्लामा अल्बानी ने इसे सही क़रार दिया है)

أَقُولُ قَوْلِي هَذَا، وَأَسْتَغْفِرُ اللهَ العَظِيمَ الجَلِيلَ لِي وَلَكُمْ، وَلِسَائِرِ الْمُسْلِمِينَ، مِنْ كُلِّ ذَنْبٍ.

दूसरा ख़ुत्बा

الحَمْدُ للهِ وَكَفَى، وَصَلَاةٌ وَسَلَامٌ عَلَى عِبَادِهِ الَّذِينَ اصْطَفَى.اما بعد!

हे अल्लाह के बन्दो! अल्लाह से डरो, इबादतें करके अपने समय को बरकत वाला बनाओ, नेकियाँ करके अपनी ज़िंदगी की पूँजी बढ़ाओ, और अपने दिनों को अच्छे कामों से आबाद करो।

हे ईमान वालो! सच्चा और पक्का ईमान वाला वही है जो हर हाल में अल्लाह की रज़ा (प्रसन्नता) की तरफ दौड़ता है, चाहे गर्मी की वजह से उसे कितनी ही तकलीफ़ क्यों न उठानी पड़े। वह अपने मालिक को खुश करने के लिए तुरंत नमाज़ के लिए उठ खड़ा होता है और अपनी नेकियों को बढ़ाने के लिए इबादतों में लग जाता है। यही वह समझदार इंसान

है जिसने ऊँचे दर्जे हासिल किए और यही वह अक़्लमन्द है जिसने खुद को मैदान-ए-महशर की तेज़ गर्मी से बचा लिया।

इसके विपरीत जो व्यक्ति मौसम की गर्मी की वजह से सुस्ती का शिकार हो जाता है, नमाज़ों के लिए नहीं जाता, और अत्यधिक गर्मी का बहाना बनाकर जुमा और सामूहिक नमाज़ों से पीछे रह जाता है; तो यही वह कमज़ोर और बदकिस्मत इंसान है जिसे उसके मन ने धोखे में डाल दिया और शैतान ने उसे बहका दिया। यह व्यक्ति ईमान वालों के काफ़िले से पीछे रह गया और उसने उस समय के पाखंडियों वाला तरीक़ा अपना लिया जब वे रब की आज्ञाकारिता से पीछे हट गए थे। जैसा कि अल्लाह तआला ने उनके हाल और कथन को बयान करते हुए कहा:

فَرِحَ الْمُخَلَّفُونَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلَافَ رَسُولِ اللهِ وَكَرِهُوا أَنْ يُجَاهِدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللهِ وَقَالُوا لَا تَنْفِرُوا فِي الْحَرِّ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ أَشَدُّ حَرًّا لَوْ كَانُوا يَفْقَهُونَ (التوبة: ٨١)

"पीछे रह जाने वाले लोग रसूल अल्लाह (के खिलाफ) अपने घरों में बैठे रहने पर खुश हुए, और उन्होंने इस बात को नापसंद किया कि वे अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों के साथ संघर्ष करें, और उन्होंने कहा कि इस गर्मी में मत निकलो। कह दीजिए: जहन्नम की आग इससे कहीं अधिक गर्म है, काश वे लोग समझते होते।" (सूरह अत-तौबा: 81)

इसी तरह वे मेहनतकश और कर्मचारी लोग जो हलाल आजीविका कमाने की कोशिश करते हैं, और अपने परिवार को इज़्ज़त की ज़िंदगी देने के लिए गर्मी की सख़्ती बर्दाश्त करते हैं; ऐसे लोगों के लिए बहुत सवाब और ऊंचे स्थान का वादा किया गया है।

चुनांचे हज़रत काब बिन उज्रह रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबी एक व्यक्ति के पास से गुजरे, तो उन्होंने काम में उसकी मेहनत और आजीविका कमाने की चुस्ती देखकर आश्चर्य किया और कहा: हे अल्लाह के रसूल! काश यह मेहनत अल्लाह के रास्ते में होती! तो आप ﷺ ने फरमाया:

إِنْ كَانَ خَرَجَ يَسْعَى عَلَى وَلَدِهِ صِغَارًا، فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللهِ، وَإِنْ كَانَ خَرَجَ يَسْعَى عَلَى نَفْسِهِ يُعِفُّهَا، فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللهِ

"यदि वह अपने छोटे बच्चों की रोजी कमाने के लिए निकला है, तो वह अल्लाह की राह में है, और यदि वह अपने आपको सवाल से बचाने और आत्मसम्मान बरकरार रखने के लिए निकला है, तो वह भी अल्लाह की राह में है।" (इस हदीस को इमाम तबरानी ने रिवायत किया है और अल्लामा अलबानी ने इसे सही क़रार दिया है)

ईमान वाले भाइयो! गर्मी की यह सख़्ती हमें इस बात पर अल्लाह का शुक्र अदा करने का ज़रिया बननी चाहिए कि उसने हमें मजबूत और पक्के मकान तथा ठंडक के साधन प्रदान किए हैं। अतः हमें चाहिए कि अपने उपकारी और देने वाले रब का शुक्र अदा करें, इन नेमतों की देखभाल करें, और संबंधित संस्थानों के साथ सहयोग करते हुए ऊर्जा की बचत करें, संयम से काम लें और फिजूलखर्ची से बचें।

इसके साथ ही हमें उन मजबूर और बेसहारा इंसानों की तकलीफ का भी एहसास करना चाहिए जो बुरे हालात की वजह से इन नेमतों और सायों से वंचित हैं। यह एहसास हमें इस बात के लिए प्रेरित करे कि हम उनकी मदद करें, उनकी मुश्किलों का निवारण करें, और गर्मी, प्यास तथा महरूमी का दुख हल्का करने के लिए जल्द कदम उठाएं। उदाहरण के लिए पानी के कुएं खोदना, छायादार पनाहगाहें और टेंट तैयार करना, वाटर कूलर्स और ठंडक के सामान उपलब्ध कराना, और ऐसे सभी साधन मुहैया कराना जो जरूरतमंदों को तेज़ गर्मी से बचाने में मददगार साबित हों। हज़रत अबू हुरैरा रज़िअल्लाह तआला अन्हु से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने फरमाया:

بَيْنَمَا رَجُلٌ يَمْشِي، فَاشْتَدَّ عَلَيْهِ الْعَطَشُ، فَنَزَلَ بِئْرًا فَشَرِبَ مِنْهَا، ثُمَّ خَرَجَ، فَإِذَا هُوَ بِكَلْبٍ يَلْهَثُ، يَأْكُلُ الثَّرَى مِنَ الْعَطَشِ، فَقَالَ: لَقَدْ بَلَغَ هَذَا مِثْلُ الَّذِي بَلَغَ بِي، فَمَلَأَ خُفَّهُ، ثُمَّ أَمْسَكَهُ بِفِيهِ، ثُمَّ رَقِيَ، فَسَقَى الْكَلْبَ، فَشَكَرَ اللهُ لَهُ، فَغَفَرَ لَهُ» قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ، وَإِنَّ لَنَا فِي الْبَهَائِمِ أَجْرًا؟! قَالَ: «فِي كُلِّ كَبِدٍ رَطْبَةٍ أَجْرٌ

"एक व्यक्ति रास्ते में चल रहा था कि उसे तेज़ प्यास लगी, उसने एक कुएं में उतरकर उससे पानी पिया, फिर जब बाहर निकला तो एक कुत्ते को देखा जो प्यास की सख़्ती से हाँप रहा था और गीली मिट्टी चाट रहा था, उसने सोचा कि इस कुत्ते को भी उतनी ही प्यास लगी है जितनी मुझे लगी थी, चुनांचे उसने अपना मोज़ा पानी से भरा, फिर उसे अपने मुंह में पकड़ा, ऊपर चढ़ा और उस कुत्ते को पानी पिलाया। अल्लाह तआला ने उसके इस अमल को

स्वीकार कर लिया और उसे माफ कर दिया।" सहाबा ने पूछा: हे अल्लाह के रसूल! क्या हमें जानवरों के साथ अच्छा व्यवहार करने पर भी पुण्य मिलता है? आप ने फरमाया: "हर जीवित और सांस लेने वाले जानवर के साथ नेकी करने में पुण्य है।" (इस हदीस को इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम ने रिवायत किया है)

ऐ अल्लाह! दरूद और सलाम नाज़िल फरमा सबसे रौशन चेहरे और चमकदार पेशानी वाले नबी पर। ऐ अल्लाह! हमारे दिलों में ईमान को प्यारा बना दे और इसे हमारे दिलों में सुंदर बना दे, और कुफ्र, पाप तथा अवज्ञा को हमारे नज़दीक नापसंद बना दे, और हमें सीधे रास्ते पर चलने वालों में शामिल फरमा। ऐ अल्लाह! इस्लाम और मुसलमानों को विजय प्रदान कर, और शिर्क तथा मुशरिकों को अपमानित कर, और अपने दीन, अपनी किताब, अपने नबी ﷺ की सुन्नत और अपने ईमान वाले बन्दों की मदद फरमा।

ऐ अल्लाह! तमाम मुसलमान पुरुषों और मुसलमान महिलाओं, तथा ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली महिलाओं को क्षमा कर दे, जो इनमें से जीवित हैं और जो इस दुनिया से जा चुके हैं।

ऐ अल्लाह! हमारे उन भाइयों की हिफ़ाज़त फरमा जो देश की सुरक्षा पर तैनात हैं, और हमारे अमीर तथा उनके उत्तराधिकारी को अपने पसंदीदा रास्ते की तौफीक प्रदान कर, और उनके तमाम कामों को अपनी आज्ञाकारिता और अपनी प्रसन्नता के अनुकूल बना दे, और इस देश को तथा तमाम मुस्लिम देशों को शांति, संतुष्टि, समृद्धि और सुरक्षा का ठिकाना बना दे।

ख़ुत्बात-ए-जुमा तैयार करने वाली कमेटि